DAINIK TRIBUNE, Chandigarh
Hindi daily
Circ: 50,203
October 10, 1993
Edit-page

हिंदी में राजनीतिक लेखन का सार्थक प्रयास

राजनीतिक लेखन और वह भी सत्ता-सलामत व सियासत में पूरी तरह सराबोर सियासतदानों के बारे में लिखना खतरे से खाली नहीं है। गुजर चुके नेताओं व घटनाओं के बारे में लिखकर कई पत्रकार, शोध लेखक और संबंधित राजनीतिज्ञों के करीब रह चुके लोगों ने काफी नाम कमाया है। लेकिन सत्तारूढ़ सियासतदानों के बारे में कलम चलाने का खतरा एक बार जिसने उठा लिया और दूरंदेशी को दरकिनार कर उनके के साथ अपनी बात जिसने रख दी, ऐसा शख्स कोई-कोई ही होता है। अंग्रेजी में इस तरह का लेखन कर कई लेखक नाम कमा चुके हैं लेकिन हिंदी में ऐसी कोशिशें कम ही हुई हैं। दो दशक से ज्यादा समय से पत्रकारिता कर रहे और इस समय दिल्ली के टाइम्स समूह प्रकाशन से संबद्ध आलोक मेहता ने 'राव के बाद कौन' किताब लिखकर ऐसी ही सार्थक कोशिश की है। वर्तमान प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंह राव के वैकल्पिक नेतृत्व के दावेदारों में जिन-जिन लोगों के नाम गिनाये जा सकते हैं, उनके राजनीतिक जीवन, उतार-चढ़ाव का इस पुस्तक में 'सांगोपांग' वर्णन है। इसमें कांग्रेस दिग्गजों नारायणदत्त तिवारी, अर्जुन सिंह, राजेश पायलट, माधवराव सिंधिया, शरद पवार व करुणाकरण के अलावा पूर्व प्रधानमंत्री चन्द्रशेखर व विपक्ष के नेता अटल बिहारी वाजपेयी को भी शामिल किया गया है। कहा यह गया है कि सरकार गिरने की स्थिति में ताज अटल बिहारी वाजपेयी के माथे पर भी विराज सकता है जबकि कांग्रेस विभाजन की स्थिति में चन्द्रशेखर पलड़ा अपनी तरफ घुमा सकते हैं।

□ राव के बाद कौन □ आलोक मेहता □ पराग प्रकाशन, 3/114, कर्ण गली, विश्वासनगर, शाहदरा, दिल्ली-1[illegible] □ पृष्ठ 93 □ मूल्य 35 रुपये।

प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बैठने के कुछ देर बाद ही उनके विकल्प की बातें होने लग पड़ी थीं। इनके पीछे निर्णय टालते रहने और सख्ती न दिखाने की राव की प्रवृत्ति और प्रधानमंत्री पद पर आंखें गड़ाये में बैठे कांग्रेस नेताओं की महत्वाकांक्षा व कोशिशें हैं। फिर प्रतिभूति घोटाला, कांग्रेस के चुनावी वादों की उपेक्षा और सरकार की लगातार गिरती साख के कारण यह सवाल उठ रहा है कि राव का विकल्प कौन है। उनके विकल्प के रूप में एक नहीं, कई नाम सामने आ रहे हैं। राजनीति के धुरंधर खिलाड़ी, अति उत्साही व महत्वाकांक्षी नेता अक्सर जोड़-तोड़ करते रहते हैं। मौके की तलाश में हैं। कांग्रेस की इस अंदरूनी स्थिति का फायदा उठाने के प्रयास में विपक्ष के कुछ दिग्गज भी हैं। इन सभी स्थितियों और राव व उनके विकल्पों के बारे में इस पुस्तक में काफी दिलचस्प वर्णन दिया गया है। लेखक ने लिखा है कि श्री राव पहले दिन से ही 'आम सहमति' की ढपली बजा रहे हैं, लेकिन इरादे से विपरीत असहमतियां बढ़ती जा रही हैं। वह किसी विवादास्पद मुद्दे पर अपनी स्पष्ट दिशा देश को नहीं दे पा रहे हैं।

किताब के 11 अध्यायों में से एक राव व आठ उनके संभावित विकल्पों पर है। पहला अध्याय राव सरकार से मोहभंग के सिलसिले पर है। अंतिम अध्याय में इन सभी नेताओं का परिचय दिया गया है।

इन नेताओं का राजनीतिक जीवन कहां से शुरू हुआ, इन्होंने क्या-क्या उतार-चढ़ाव देखे, क्या-क्या छलांगें इन्होंने लगायीं- सबका उल्लेख इस किताब में है। इनसे इस पत्रकार ने समय-समय पर की गयी मुलाकातों में क्या देखा, पाया, उनके बारे में क्या जगजाहिर है और क्या उनके बारे में पता नहीं- यह सब कुछ पुस्तक में है। यह भी कि भविष्य ने इनके लिए अपने गर्भ में क्या छिपा रखा है- इन संभावनाओं, इन नेताओं की कमजोरियों व सशक्तताओं-खूबियों को भी 'पर्सनल अकाउंट' की तरह लिखा गया है। इन नेताओं के व्यक्तित्व की बारीकियों का वर्णन है। इसमें और राजनीति में दिलचस्पी रखने वालों के लिए यह पठनीय पुस्तक है। ऐसा नहीं है कि कभी राव के विकल्प का फैसला होने के बाद यह किताब अप्रासंगिक हो जायेगी अथवा अपार विपुल संभावनाओं वाली भारतीय राजनीति में इन नेताओं द्वारा आइंदा कोई भी अप्रत्याशित कदम उठाने पर इस किताब का कोई महत्व नहीं रह जायेगा- ऐसा भी कतई नहीं है। क्योंकि इनके बारे में पुस्तक में दिया गया सत्य शाश्वत रहेगा बशर्ते कोई छोटा-मोटा खंडन-मंडन न कर दे, जिसकी गुंजाइश बहुत क्षीण है। इस तरह कांग्रेस बल्कि देश की वर्तमान राजनीति का ही लेखा-जोखा इस किताब में है। भाषा भी अच्छी है। बल्कि अगर यह कहा जाये कि हिंदी में अपनी किस्म की ऐसी यह नयी कोशिश है, तो संभवतया अतिश्योक्ति नहीं होगी, इसीलिए कई वर्गों के लिए यह अति पठनीय है।

—जीतेन्द्र अवस्थी